



ISSN: 2456-4427

Impact Factor: RJIF: 5.11

Jyotish 2018; 3(2): 35-36

© 2018 Jyotish

www.jyotishajournal.com

Received: 26-05-2018

Accepted: 29-06-2018

Dr. Sangeeta Singh

Assistant Professor, K.D.S

Mahavidyalaya Subaspur Pali,

Jaunpur, Uttar Pradesh, India

योग दर्शन के प्रत्यक्ष सिद्धान्त की व्यवहारिक उपादेयता

Dr. Sangeeta Singh

प्रस्तावना

योग दर्शन के प्रणेता महर्षि पतंजलि है। इसी कारण इस दर्शन को पातंजल दर्शन भी कहते हैं। इस दर्शन का सर्वप्रथम ग्रन्थ "योग-सूत्र" यास "पातंजल-सूत्र" है। यह चार भागों में विभक्त है— समाधि पाद, साधन पाद, विभूति पाद तथा कैवल्य पाद, जिसके प्रत्येक भाग को 'पाद' कहते हैं।

योग दर्शन का साहित्य अन्य दर्शनों की भाँति विशाल नहीं, परन्तु यह अत्यन्त वैज्ञानिक दर्शन है। योग की परिभाषा बतलाते हुये महर्षि पतंजलि कहते हैं कि "योग चित्त-वृत्ति का निरोध है।" प्रकृति में सत्व, रज एवं तम तीन गुण हैं। इन तीनों में चित्त सत्व गुण स्वभाव वाला है। इस चित्त की असंख्य वृत्तियाँ हैं। चित्त एक अगाध नदी के समान है। अगाध नदी में असंख्य तरंगें उठती रहती हैं। ज्ञानजन्य संस्कार से अनेकों प्रवाह के समान भाव उठते रहते हैं। ये भाव काम, क्रोध, लोभ, मोह, राग, द्वेषादि अनेक रूप धारणा करते हैं। चित्त के इसी तरंग-रूप परिणाम का नाम वृत्ति है। जब चित्त की सर्व साँसारिक वृत्तियाँ रुक जाती हैं तो साधक का ध्यान ध्येय परमात्मा में लीन हो जाता है। चित्त-वृत्ति का निरोध होने पर परमात्मा स्वरूप दिखलायी पड़ता है। यही योग या समाधि है। समाधि या चित्त-वृत्ति-निरोध रूप योग की दो अवस्थाएँ मानी गयी हैं— सम्प्रज्ञात तथा असम्प्रज्ञात। सम्प्रज्ञात योग या समाधि के चार अंग हैं— वितर्कानुगत, विचारानुगत, आनन्दानुगत तथा अस्मितानुगत। असम्प्रज्ञात समाधि पूर्ण चित्त-वृत्तियों के निरोध की अवस्था है। इसे सर्व-वृत्ति-निरोध भी कहते हैं। योग के आठ अंग माने गये हैं, जिन्हें अष्टांग योग कहते हैं। ये आठ अंग हैं— यम, नियम, आसान, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि।

वृत्ति विचार:-

योग को चित्त की वृत्तियों का निरोध माना गया है। जब चित्त की वृत्तियाँ निरुद्ध हो जाती हैं तो जीवात्मा अपने शुद्ध स्वरूप (चेतन मात्र स्वरूप) में स्थित हो जाती है। वृत्ति के दो स्वरूप हैं -7 विलष्ट और अविलष्ट, अर्थात् दुःखदायी और दुःखरहित। वृत्ति के पाँच प्रकार हैं - (1) प्रमाण-वृत्ति, (2) विपर्यय-वृत्ति, (3) विकल्प-वृत्ति, (4) निद्रा-वृत्ति तथा (5) स्मृति-वृत्ति।

प्रमाण-वृत्ति:-

प्रमा के कारण को प्रमाण है। प्रमा अनिभिगत, अबाधित, अर्थ विषयक ज्ञान है। ऐसे ज्ञान के अत्यन्त के अत्यन्त साधक (करण) को प्रमाण कहते हैं। साँख्य-योग के अनुसार, प्रमाण तीन हैं— प्रत्यक्ष, अनुमान और आगम। "प्रमीयतेऽनेन इति प्रमाणम्।" इस व्युत्पत्ति के अनुसार जिसके द्वारा प्रमा अर्थात् ज्ञान की उत्पत्ति होती है, उसे प्रमाण कहते हैं।

इन्द्रियार्थ-सन्निकर्ष, लिंग-ज्ञान तथा पद-ज्ञान के माध्यम से परिणामित चित्त-वृत्ति-रूप प्रमाण के द्वारा 'पौरुषेय-बोध (पुरुष का होने वाला ज्ञान) होता है।

प्रत्यक्ष:-

जिस प्रकार तड़ाग आदि में भरा हुआ जल, नालिका के द्वारा खेत में पहुँच कर क्यारियों के आकार को प्राप्त कर लेता है, उसी प्रकार वाह्य पदार्थ से संयुक्त होकर विषय को ग्रहण करता है, अर्थात् उसका विषयाकार परिणाम होता है। चित्त की इसी विषयाकारता को 'प्रत्यक्ष प्रमाण' करते हैं।

अनुमान:-

अनुमान व्याप्ति मूलक है। व्याप्ति दो वस्तुओं के नियम सम्बन्ध को कहते हैं, जैसे - अग्नि एवं धूम की व्याप्ति है, अर्थात् जहाँ धुआँ रहता है, वहाँ वहि अवश्य रहती है। पाकशाला, यज्ञशाला आदि में अग्नि के बिना धूम की सत्ता नहीं देखी जा सकती है।

Corresponding Author:

Dr. Sangeeta Singh

Assistant Professor, K.D.S

Mahavidyalaya Subaspur Pali,

Jaunpur, Uttar Pradesh, India

इस प्रकार धूम एवं अग्नि के व्याप्ति सम्बन्ध को जानने वाला व्यक्ति जब दूर से पर्वत आदि पर धूम-रेखा को उठता हुआ देखता है, तब उसकी 'यह पर्वत वहि वाला है, इस प्रकार की चित्त-वृत्ति बनती है। इसे अनुमान प्रमाण कहते हैं। अनुमान तीन प्रकार का है— पूर्ववत् शेषवत् एवं सामान्यतोदृष्ट। "योग-सिद्धान्त-चन्द्रिका" में अनुमान के भेदों पर प्रकाश डाला गया है।

विपर्यय-वृत्ति:-

विपर्यय-वृत्ति मिथ्या ज्ञान पर आधारित है। तद्रूप में प्रतिष्ठित न होने वाला ज्ञान मिथ्या है। शुक्ति का शुक्ति रूप में ज्ञान ने होकर रजस के रूप में जो ज्ञान होता है, उसे विपर्यय कहते हैं।

विकल्प-वृत्ति :-

जो ज्ञान वस्तु-शून्य हो तथा शब्दमात्र के उच्चारण से उत्पन्न होता हो, उसे विकल्प कहते हैं। उदाहरणार्थ, मृग-तृष्णा के जल में स्थान किये हुये, आकाश-पुष्प को धारण क रवह बन्ध्या-पुत्र जा रहा है, जिसके हाथों में खरगोश के सींग का धनुष है।

“मृगतृष्णाभसि स्नात्: खपुष्पकृतशेखरः।
एवं बन्ध्यासूतो याति शशश्रंगधनुर्धरः।।”

निद्रा-वृत्ति:-

जिस वृत्ति के कारण ज्ञान का अभाव होता है, वह निद्रा-वृत्ति है।

स्मृति-वृत्ति:-

अनुभूत विषयों का न भूलना ही स्मृति है। तात्पर्य यह है कि एक बार अनुभव किये हुये विषयों का बीज-रूप से संस्कार के द्वारा रहना ही स्मृति है। स्मृति दो प्रकार की है— यथार्थ और अयथार्थ। यथार्थ-स्मृति यथार्थ पदार्थ का स्मरण कराती है तथा अयथार्थ-स्मृति कल्पित, मिथ्या पदार्थ का स्मरण कराती है। इस प्रकार महर्षि पतंजलि ने 'योगश्चित्तवृत्ति निरोधः' सूत्र के द्वारा यह माना है कि ऊपर उल्लिखित चित्त की वृत्तियों को निरोध मुमुक्षु के लिये आवश्यक है।

वृत्ति-निरोध के उपाय:-

प्रत्येक प्राणी की अर्जित शक्तियाँ भिन्न-भिन्न हैं। प्रत्येक का अपना-अपना व्यक्तित्व जीने का मापदण्ड एवं साधना-क्षेत्र पृथक-पृथक होता है। योगशास्त्र में साधकों की तीन श्रेणियों की गयी है— उत्तम, मध्यम एवं अधम। इन्हें योगरूढ़, युज्जान तथा आरुरुक्षु भी क्रमशः कहा जाता है। महर्षि पतंजलि ने उत्तम साधकों के चित्त-वृत्ति-निरोध के लिये 'अभ्यास-वैराग्य उपाय बतलाया है।

वर्तमान जीवन में योग-साधनार्त् वानप्रस्थियों को मध्यम साधक कहा जाता है। पर्यन्त कालयापन करते हैं ऐसे दीन-हीन अधम साधक योग-सोधना के महत्व को क्या समझें? जौहरी ही हीरे को परख सकता है, जिनका चित्त अभी पूर्ण रूप से मलिन एवं अपरिष्कृत है, योग-मार्ग के पथिक बन सकें, इस सार्वभौम मंगल की कामना से महर्षि पतंजलि ने उनके लिये 'अष्टांग योग' की साधना बतलायी है। जिस प्रकार पहली बार पाठशाला भेजा गया शिशु दसवीं कक्षा में नहीं चल पाता है, उसी प्रकार इनके लिये प्रारम्भ से ही उत्तम एवं मध्यम साधकों के माग्न से चलना असम्भव होता है क्योंकि इनकी चित्त-भूमि वृत्ति-निरोध के लिये अनुकूल नहीं रहती है।

सन्दर्भ विषय-सूची

1. ब्रह्म सूत्र — शंकराचार्य
2. अद्वैत सिद्धान्त — मधुसूदन सरस्वती
3. भारतीय दर्शन — आचार्य बलदेव उपाध्याय
4. रत्न प्रभाव टीका — शंकराचार्य

5. भारतीय दर्शन — देवराज नन्दकिशोर
6. श्रीमद भागवत गीता — श्री हरिकृष्णदास गोयन्दका
7. सर्वदर्शन संग्रह — माध्वाचार्य
8. बौद्ध दर्शन और वेदान्त — सी०डी० शर्मा
9. भारतीय दर्शन की रूपरेखा — संगम लाल पाण्डेय
10. भारतीय दर्शन की समस्याओं और समकालीन दर्शन — डॉ० बद्दीनाथ सिंह
11. रत्नावली — नागार्जुन
12. चतुःशतक — आर्यदेव
13. योगाचार भूमिशास्त्र — असङ्ग
14. प्रमाण वार्तिक — धर्मकीर्ति
15. वैशेषिक सूत्र — कणाद
16. तत्व मीमांसा एवं ज्ञान मीमांसा — केदार नाथ तिवारी
17. Six ways of knowing - D.M. Dutt
18. Brahma – Sutra - S. Radhakrishnan
19. Acritical Survey of Indian philosophy - C.D. Sharma
20. Hinduism and Buddhism - A. Coomarswamy